"भाठी कार"

- सचि काल कूड़ वरतिआ कलि कालख बेताल । बीउ बीजि पति ले गए अब किउ उगवै दालि।

अर्थः- संसारिक जीवों के हृदय में से सच उड़ गया है और झूठ ही झूठ प्रधान हो रहा है, कलियुग की पापों की कालिख के कारण जीव भूतने बन रहे हैं भाव, जगत का मोह प्रबल हो रहा है, जगत के विधाता से साझं बनाने का ख्याल जीवों के दिलों में से दूर हो रहा है, और स्मरण के बिना जीव मानो भूतने हैं । जिन्होंने हरि का नाम बीज अपने हृदयों में बीजा, वे इस जगत से शोभा कमा के गए । पर अब नाम का अंकुर फूटने से रह

गया है क्योंकि मन के दाल की तरह दो - फाड़ हो रहे हैं, भाव, दुचित्तेपन के कारण जीवों का मन नाम में नहीं जुड़ता ।

जे इक होई त उगवै रुती हू रुत होई । नानक पाहै बाहरा कोरै रंग न सोई । भै विचि खुबि चड़ाईऐ सरम पाहु तनि होई । नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोई । 1। म0-1।

अर्थः- बीज उगता तब ही है, अगर दाना बीज साबत हो और बीजने की ऋतु भी फबवीं हो, इसी तरह रब का नाम - अंकुर भी तभी फूटता है अगर मन साबत हो, अगर पूर्ण तौर पर ईश्वर की ओर लगा रहे और समय अमृत बेला भी गवाया ना जाए । हे नानक ! अगर लाग ना बरती जाए तो कोरे कपड़े को वह सुंदर पक्का रंग नहीं चढ़ता जो लाग बरतने से चढ़ता है । इस तरह अगर इस कोरे मन को रब के नाम रंग में सुंदर रंग देना हो, तो पहले इसे ईश्वर के डर रूपी खुंब में रखें फिर मेहनत और उद्यम की पाह दें । इसके बाद हे नानक ! अगर इस मन को रब की भक्ति में रंगा जाए, तो माया - छल इसके नजदीक भी नहीं फटकती ।

• लब पाप दुई राजा महता कूड़ होआ सिकदार । काम नेब सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचार । अंधी रयत गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदार । गिआनी नचहि वाजे वावहि रुप करहि सीगार ।

अर्थः- जगत में जीवों के लिए जीभ का चस्का मानो राजा है, पाप मंत्री है और झूठ चौधरी है, यहाँ लब और पाप के दरबार में काम नायब है, इसे बुला के सलाह पूछी जाती है, यही इनका बड़ा सलाहकार है । इनकी प्रजा ज्ञान हीन होने के कारण जैसे अंधी हो के तृष्णा आग की चट्टी भर रही है व्यर्थ की मेहनत में लगी हुई है । जो मनुष्य अपने आप को ज्ञानवान उपदेशक कहलवाते हैं, वे नाचते हैं, बाजे बजाते हैं और कई तरह के भेस

बदलते हैं और श्रृंगार करते हैं वे ज्ञानी ऊँचा - ऊँचा चिल्लाते हैं, युद्धों के प्रसंग सुनाते हैं और योद्धाओं की वारों की व्याख्या करते हैं ।

उचे कूकहि पादा गावहि जोधा का वीचार । मूरख पडित हिकमति हुजति संजे करहि पिआर । धरमी धरम करहि गावावहि मंगहि मोख दुआर । जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बार ।

अर्थः- पढ़े - लिखे मूर्ख निरी चालाकियां करनी और दलीलें देनी ही जानते हैं, पर माया इकट्ठी करने में ही जुटे हुए हैं । जो मनुष्य अपने आप को धर्मी समझते हैं, वे अपनी ओर से तो धर्म का काम करते हैं, पर सारी मेहनत गवा बैठते हैं, क्योंकि इसके बदले में मुक्ति का दर मांगते हैं कि हम मुक्त हो जाएं भाव, धर्म का काम करते हैं पर निष्काम हो के नहीं, अभी भी वासना के बांधे हैं । कई ऐसे हैं जो अपने आप को जती कहलवाते हैं, पर जती होने की जुगति नहीं जानते ऐसे ही देखा - देखी घर - घाट छोड़ जाते हैं ।

सभ को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै । पति परवाणा आपे होवै घटि न कोई जापै। 2।म0-1।

अर्थः- इस लब, पाप, झूठ और काम का इतना प्रभाव है जबा है कि जिधर देखो हरेक जीव अपने आप को पूरा समझदार समझता है । कोई मनुष्य ये नहीं कहता कि मेरे में कोई कमी है । पर, हे नानक ! तभी मनुष्य तोल में परख की कसौटी पर पूरा उतरता है अगर तराजू के दूसरे पल्ले में ईश्वर की दरगाह से मिली हुई इज्जत रूपी बाँट रखा जाए, अर्थात वही मनुष्य कमी - रहित है, जिसे प्रभु की दरगाह में आदर मिले ।

• वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोई । सभनी छाला मारीआ करता करे सु होई । अगै जाति न जोर है अगै जीउ नवे । जिन की लेखै पति पवै चगे सोई केई ।3। पउड़ी।

अर्थः- जो बात ईश्वर की ओर से स्थापित की जा चुकी है वही हो के रहेगी, क्योंकि वह सच्चा प्रभु हरेक जीव की खुद संभाल कर रहा है । सारे जीव अपना - अपना जोर लगाते हैं, पर होता वही है जो करतार करता है । ईश्वर की दरगाह में ना किसी ऊँच - नीच जाति का भेदभाव है, ना ही किसी की जोर - जबरदस्ती चल सकती है, क्योंकि वहाँ उन जीवों से वास्ता पड़ता है जो अजनबी हैं भाव, जो किसी ऊँची जाति व जोर जबर को जानते ही नहीं, इसलिए किसी दबाव में नहीं आते । वहाँ, वही कोई - कोई मनुष्य ही भले गिने जाते हैं, जिन्हें कर्मों का लेखा होने के समय आदर मिलता है भाव, जिन्होंने जगत में भले काम किए थे, और इस कारण उन्हें ईश्वर के दर पे आदर मिलता है ।

धुरि करम जिना कउ तुध पाइआ ता तिनी खसम धिआइआ । एना जंता कै वसि किछ नाही तुध वेकी जगत उपाइआ ।

अर्थः- हे प्रभु ! जिस लोगों पर तूने धुर से ही बख्शिश की है, उन्होंने ही मालिक को भाव, तुझे स्मरण किया है । इन जीवों के अपने बस में कुछ भी नहीं है कि तेरा सिररन कर सकें ।

इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपह तुध खुआइआ । गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुध आप बुझाइआ । सहजे ही सचि समाइआ ।11। (1-468-469)

अर्थः- तूने रंग - बिरंगा जगत पैदा किया है कई जीवों को तू अपने चरणों में जोड़े रखता है, पर कई जीवों को तूने अपने आप से

विछोड़ा हुआ है । जिस भाग्यशाली मनुष्य के हृदय में तूने अपने आप की समझ डाल दी है, उसने सतिगुरु की मेहर से तुझे पहचान लिया है और वह सहज - स्वभाव ही अपनी अस्लियत के साथ ऐक - मेक हो गया है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"